COURSE-2

शिक्षा का अर्थ (MEANING OF EDUCATION)

"By education I mean an all round drawing out of the best in child and man—body, mind and spirit." आत्मा

—**Mahatma Gandhi**

शिक्षा का सम्प्रत्यय—एक विश्लेषण (CONCEPT OF EDUCATION : AN ANALYSIS)

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं विकास तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा ही उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाती है। शिक्षा एक व्यक्ति को सरलता से अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने में सहायता करती है। शिक्षा जितनी उच्च होगी, उतनी ही शीघ्रता से वह अपने जीवन की कठिन समस्याओं को सुलझा सकेगा। यही कारण है कि प्रागैतिहासिक काल से ही शिक्षा के महत्व को अनुभव किया गया।

शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। मानव जन्म से ही विभिन्न योग्यताओं से युक्त होता है। मानवीय जीवन के बौद्धिक तथा सांस्कृतिक तत्व ही मनुष्य को अन्य पशुओं से भिन्न बनाते हैं। मानव को शिक्षा प्राप्त करने तथा कुछ सीखने के योग्य माना जाता है। शिक्षा, समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही बालक में परिपक्वता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में समर्थ होती है। शिक्षा मानव जाति का संरक्षण करती है, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को बनाए रखने में तथा युगों-युगों से इतिहास की देन को विकसित करने में सहायता करती है।

शिक्षा ही एक ऐसी विस्तृत प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति को अंधकार, गरीबी तथा संकटों से बाहर निकालती है तथा व्यक्तित्व के सभी पक्षों—शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक का विकास करती है जिसके परिणामस्वरूप वह संसाधनयुक्त तथा जागरूक नागरिक बन जाता है और अपने समाज तथा देश के विकास के लिए अपनी क्षमताओं का योगदान देता है। यदि इस संसार को शिक्षा रूपी रोशनी से रोशन न किया जाए तो यह अंधकार में ही घिर कर रह जाएगा।

"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।" —M.K. Gandhi

Scanned with CamScanner

शिक्षा व्यक्ति को एक फूल की भाँति विकसित होने में सहायता करती है, जो अपनी सुगन्ध वातावरण में चारों ओर फैलाता है। जैसाकि लोके (Locke) के शब्दों से भी स्पष्ट है–"पौधे कृषि से विकसित होते हैं और मनुष्य शिक्षा से।" ("Plants are developed by cultivation and man by education.") शिक्षा व्यक्ति की योग्यताओं का विकास करके उसे प्राकृतिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण के योग्य बनाती है। माँ के गर्भ से ही बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया जो मानव को अपने वातावरण में सफल बनाती है, वह जीवनपर्यन्त चलती रहती है। अन्य शब्दों में, शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, तथा प्रत्येक अनुभव से व्यक्ति में स्वयं के बारे में तथा अपने वातावरण के बारे में सूझ–बूझ विकसित होती है। अतः शिक्षा केवल जीवन के लिए तैयारी नहीं है, यह जीवन का पर्यायवाची है।

अब प्रश्न यह उठता है 'शिक्षा क्या है ?' विचारकों, दार्शनिकों तथा शिक्षा–शास्त्रियों ने, मानव सभ्यता के विभिन्न कालों में शिक्षा को परिभाषित करने का प्रयास किया तथा ऐसा करने में उन्होंने शिक्षा की परिभाषा पर अपने मूल्यों तथा सिद्धान्तों की छाप छोड़ी है। जिस प्रकार समाज कभी स्थिर नहीं रह सकता है, जैसे–जैसे समाज में परिवर्तन होता है, वैसे ही शिक्षा के कार्य भी परिवर्तित हो जाते हैं और यही कारण है कि शिक्षा एक निरन्तर प्रक्रिया है। यह विकास प्रक्रिया में विभिन्न युगों तथा स्तरों से होकर गुजर चुकी है तथा प्रत्येक समय में इसे समाज की प्रचलित आवश्यकताओं तथा अवस्थाओं के अनुरूप भिन्न अर्थ दिया गया। शिक्षा का सम्प्रत्यय आज भी विकास की प्रक्रिया में है क्योंकि यह व्यक्ति तथा समाज के लक्ष्यों, मूल्यों तथा आकांक्षाओं के अनुरूप ही विकसित होती है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

शिक्षा का अंग्रेजी शब्द एजूकेशन (Education) लेटिन शब्द ऐजूकेयर (Educare) से निकला है जिसका अर्थ है पालन पोषण करना या विकसित करना। अर्थात् शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालक का पालन पोषण या विकास करती है। उसी भाषा में एक अन्य शब्द है 'ऐजूसीयर' (Educere) जिसका अर्थ है विकसित करना या बाहर निकालना। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक के आन्तरिक गुणों का पूर्ण रूप से विकास करना तथा उसे निर्देशन देना है। कुछ अन्य विद्वान हैं जिनका यह मानना है कि शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति एक अन्य लेटिन शब्द 'ऐजूकेटम' (Educatum) से हुई है, जिसका अर्थ है शिक्षण या प्रशिक्षण की कला।

लेटिन शब्द	अर्थ
ऐजूकेयर	पालन पोषण करना
ऐजूसीयर	विकसित करना, बाहर निकालना
ऐजूकेटम	शिक्षण या प्रशिक्षण की कला

ऐजूकेटम शब्द उसी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है 'ई' (E) तथा 'ड्यूको' (Duco)। 'ई' का अर्थ है 'अन्दर से' और 'ड्यूको' का अर्थ है 'आगे बढ़ाना या बाहर निकालना'। इस प्रकार एजूकेशन का अर्थ हुआ— बच्चे को आन्तरिक शक्तियों को बाहर की

Scanned with CamScanner

ओर प्रकट करने की प्रक्रिया। परन्तु इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि जब तक कुछ अन्दर नहीं डाला जाएगा, तब तक अन्दर से बाहर नहीं निकाला जा सकता। अत: शिक्षा शब्द से अभिप्राय है ऐसा पोषक वातावरण प्रदान करना जो बालक की क्षमताओं का विकास करने तथा उसे बाहर निकालने में सुविधा प्रदान करे।

शिक्षा के पर्यायवाची शब्द (Synonyms of Education)

भारत में शिक्षा मानवीय सभ्यता की उत्पत्ति के समय से विद्यमान है, जब हजारों वर्ष पहले 'गुरुकुल' और 'गुरु-शिष्य परम्परा' या 'अध्यापक अनुयायी परम्परा' का विकास हुआ था। शिक्षा संस्कृत के दो प्रमुख शब्दों से सम्बन्धित है—

शिक्षा (Shiksha)—यह संस्कृत शब्द 'शास्' से निकला है जिसका अर्थ है 'अनुशासन' या 'नियन्त्रण'।

विद्या (Vidya)—वह संस्कृत शब्द 'विद्' से निकला है, जिससे अभिप्राय है 'जानना'।

अंग्रेजी में एजूकेशन तथा हिन्दी में शिक्षा प्रत्यय का विश्लेषण करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि इन दोनों शब्दों के अर्थों में विभिन्नता है, परन्तु एक समानता भी है कि इन सम्प्रत्ययों में मानवीय विकास निहित है। अत: श्रेष्ठ व्यक्ति तथा श्रेष्ठ समाज के लिए अनुशासन तथा ज्ञान सदा ही आधारभूत शिलाएँ सिद्ध हुई हैं।

पैडागोगी (Pedagogy)—कभी-कभी शिक्षा के लिए पैडागोगी शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द दो शब्दों का सम्मिश्रण है—'पेड्स' (Paides) और 'ए-गेन' (a-gain) जिसका अर्थ है 'लड़का' तथा 'आगे बढ़ाना', जिसका अर्थ हुआ 'बालक को आगे बढ़ाना।' अत: यह बालक के पथ प्रदर्शन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया शिक्षण विज्ञान है।

इस प्रकार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner